अंतरा-शब्दशक्ति

हमारा कश्मीर

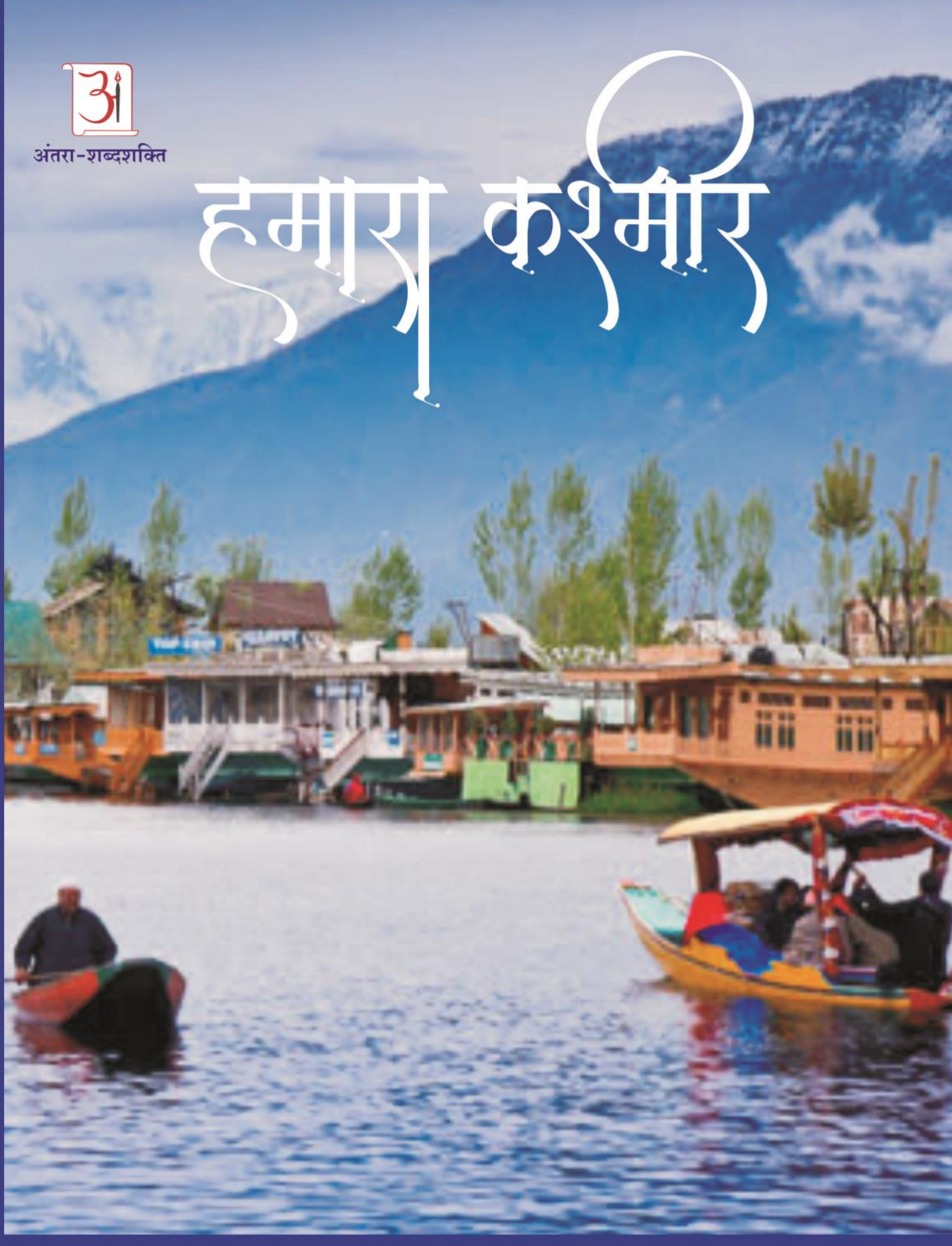

काव्य संग्रह

आशा जाकड़

हमारा कश्मीर

(काव्य संग्रह)

आशा जाकड़

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-03-1

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- आशा जाकड़
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Hamara Kashmir by Asha Jhakar

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मन की बात

सत्य है कि कविता लिखी नहीं जाती।जब दूसरों की आह- कराह ह्रदय को झकझोर देती है, तब ह्रदय का उमड़ता सैलाब पन्नों पर आ जाता है तो वही कविता बन जाती है या अत्यधिक खुशी में मन गुनगुनाने लगता है तो ह्रदय के उद्गार कविता का रूप ले लेते हैं।

बचपन में कविता, कहानी लिखने का बीज कब मुझमें अंकुरित हुआ, याद नहीं,कभी खुशी के मौके पर या दुख के माहौल में कविता पन्नों पर उतरने लगी। कभी देश की हालत देख या कभी नारी की स्थिति देख ह्रदय दुखी हुआ तो व्यथा कविता बनती रही।1999 में कारगिल युद्ध के दौरान आनन-फानन में मेरे काव्य संग्रह "राष्ट्र को नमन" का विमोचन हुआ। अभी कश्मीर में युद्ध की गूंज ने वेदना की ऐसी चिंगारी सुलगा दी कि भाव उमड़ने लगे,शब्द निकलने लगे, छन्द बनने लगे, आग उगलने लगे। कश्मीर की चोटियाँ, बर्फीली आँधियाँ, शहीद होते सैनिक, अबोध बच्चों की मूक आँखें और आतंकवादियों की घिनोनी हरकतें आदि से मेरा मन हाहाकार कर उठा। काश मैं अपने वतन के लिए कुछ कर पाती।

सरहद पर जाने वाले शहीदों ने
झेली हैं अपने सीने पर गोलियाँ
मिटा दी हैं अपनी कहानियाँ
न की अपने परिजन की परवाह
दिला रहे अन्त में हमें फतह
निभा रहे देश के प्रति अपना कर्तव्य
क्या नहीं है हमारा उनके प्रति कर्तव्य ?
उनके परिजनों के आँसुओं को दामन में समेट लें
मासूम, बिलखते जीवन में खुशियाँ भर दें।
जिन्होंने मिटादी है अपनी खुशियाँ

देकर अपनी अनोखी कुर्बानियाँ
मैं अर्किंचन,
कर रही उन्हीं को समर्पित।
कश्मीर तो हमारा है।

प्रायः मेरी कविताएं देशभक्ति-भावना से ओतप्रोत हैं जिसे पढ़कर लोगों मे देश प्रेम की भावनाए हिलौरे लेने लगें। मैंने कविताओ के द्वारा सकारात्मकता उकेरने की कोशिश की है। कहीं कुछ त्रुटि रह गई हो तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।। पाठकों कीआलोचना का स्वागत है।

आशा जाकड़

अनुक्रमणिका

1.	जयति जय जय मात शारदे	7
2.	कश्मीर की चोटी पर झंडा अपना फहराना है	8
3.	कश्मीर प्रान्त हमारा है	9
4.	कश्मीर की आह	10
5.	कश्मीर अमन के लिए	11
6.	कश्मीर हमारा ही रहेगा	12
7.	कश्मीर तुम्हें पुकार रहा	13
8.	तिरंगा झंडा लहराता जा नीलगगन	14
9.	शेर की मांद में कौन गीदड़ घुस आया?	15
10.	आज वतन खतरे में है	16
11.	खामोश	17
12.	किसने मद की मदिरा घोली	18
13.	कैसी आई रे दिवाली?	19
14.	ललनाओ हो जाओ तैयार	20
15.	कैसा आया रे बसंत?	21
16.	आखिर कब ?	22
17.	कश्मीर की अन्तःव्यथा	23
18.	कश्मीर:ममता की खुशबू	24
19.	खिलाएँ पुष्प हम शुद्ध आचरण के	25

20. अटलजी हिम जैसे अटल 26

21. आजादी का सफर कितना लंबा है ? 28

22. भारत राष्ट्र महान 30

23. सलाम 32

जयति जय जय मात शारदे

जयति जय जय माता शारदे करते जय जय गान।
शीश झुकाकर अर्चन करते गायें हम महिमा गान।।
झरनों की तुम कलकल ध्वनि हो-
नदियों की तुम अविरल गति हो
भावों का समन्दर जब उमड़े करतल सुमधुर गान।
जयति जय जय मात शारदे करते जय जय गान।।
इन्द्रधनुष से स्वर हैं तुम्हारे
नव रस के अलंकार तुम्हारे
सुर लय ताल सुनाये मन को कोकिल कंठी तान।
जयति जय जय माता शारदे करते जय जय गान।।
वीणा के जब सप्तक बजते
शब्द शब्द से छन्द निकलते
शीतल पवन झकोरे लेकर गाए दिशिदिश गान।-
जयति जय जय माता शारदे करते जय जय गान।।
ज्ञान दया की तुम हो जननी
शब्द सुरों की तुम हो रानी
ज्ञान की गंगा बहा दो अम्बे दे दो विद्या दान।
जयति जय जय मात शारदे करते जय जय गान।।

कश्मीर की चोटी पर झंडा अपना फहराना है

गूंज उठी हुंकार देश में, कश्मीर को हमें बचाना है।
कश्मीर की चोटी पर, झंडा अपना फहराना है।
निर्दोषों का खून बहाकर, लाशों पर महल सजाए हैं।
औरों के चिराग बुझा कर, अपने घर दीप जलाए हैं।
तुम्हारी हठधर्मिता को, अब हमें कफन पहनाना है।
कश्मीर की चोटी पर, झंडा अपना फहराना है।
दोस्ती कर धोखेबाजी की, पाक उसे भूल ना पाएंगे
घुसपैठ की चोरी के लिए, तुझे माफ कर न पाएंगे।
तुम्हारी इस गद्दारी को, अब हमें सबक सिखाना है
कश्मीर की चोटी पर, अपना झंडा फहराना है
अमर शहीदों के अंग भंग कर, जश्न तुम मनाते हो।
कायरों की तरह वारकर, शेरो की तरह गुर्राते हो।
तुम्हारी घिनौनी हरकतों का, अब पर्दाफाश कराना है।
कश्मीर की चोटी पर, अपना झंडा फहराना है।
तन में एक बूँद खून की, एक इंच कश्मीर नहीं देंगे।
पाक तुम्हारे नापाक इरादे, अब पूर्ण नही होने देंगे।
पाश्विकता के उच्च शिखर को, अब जमीं पर लाना है।
कश्मीर की चोटी पर, अपना झण्डा फहराना है।

कश्मीर प्रान्त हमारा है

दोस्ती का जाल बिछा, छुरा पीठ में मारा है।
दूर हटो ए पाकिस्तानी कश्मीर प्रान्त हमारा है।
क्या भूल गए कि तुम भारत का ही इक हिस्सा हो
हिन्दू मुस्लिम की लाशों का तुम इक किस्सा थे।-
आज हमारी चुनौतियों को तुमने फिर ललकारा है
दूर हटो ए पाकिस्तानी कश्मीर प्रान्त हमारा है।
निज गृह मे जो आग लगी है पहले उसे बुझाओ
कश्मीर वादियों में मत हिंसा की चिंगारी सुलगा
क्रोध नफरत ईर्ष्या को सदा तुमने स्वीकारा।है
दूर हटो ए पाकिस्तानी कश्मीर प्रान्त हमारा है।।
रक्तपात तुम्हारा पेशा मत खून की होली खेलो
आनेवाली निज पीढ़ी को मत अग्नि मे धकेलो
तुम्हारी इस गद्दारी से अब सर्वनाश तुम्हारा है।
दूर हो ए पाकिस्तानी कश्मीर प्रान्त हमारा है।
भारत का विभाजन कर नहीं उर ज्वाला शान्त हुई
तुम जालिमो के हृदय में नही मानवता बची हुई
मौत का पैगाम बन कश्मीर वादियों ने तुम्हे पुकारा है
दूर हटो ए पाकिस्तानी कश्मीर प्रान्त हमारा है।

कश्मीर की आह

बहुत हो चुका, बन्द करो ये रक्तपात,
चिनारो के वृक्षों को कहने दो अपनी बात।
हरी भरी थी मेरी घाटियां,
क्यों पौधो को लाल किया?
मुस्कराते खलिहानों को,
क्यों सिसकियो से भर दिया?
लहलहाती वादियों को,
क्यों लहूलुहान किया?
मैं भारत का शीश मुकुट,
क्यो अलग मुझे तुम करते हो?
साम्प्रदायिक दंगों में आज,
तुम मुझसे नाता रखते हो।
मेरी ये आरजू है, मत मेरी हस्ती मिटा।
कुछ होने से पहले,
मेरी अस्मत बचाओ।
मत करो कुछ ऐसा
कि मिट जाए हस्ती मेरी।
आगामी पीढियां कहें,
क्या यही रूह थी तेरी ?
भारत क्या वही रूह थी तेरी?

कश्मीर अमन के लिए

कश्मीर की घाटियां रो रही अमन के लिए
कश्मीर की फिजाएं रो रही चमन के लिए
गुलाब के फूलों में आ रही बारूद की गंध
केसर की क्यारियां दे रही, लाशों की गंध
कश्मीर की जनता रो रही पलायन के लिए
कश्मीर की घाटियां रो रही, अमन के लिए।।
है कोई वीर पुत्र जो पाक शिकस्त से बचाले -,
है कोई दिलेर जो मेरे उजड़े चमन को सजा दे,
कश्मीर की रूह तड़पती अपने वतन के लिए,
कश्मीर की घाटियां रो रही, अमन के लिए,
जगह जगह लाशों के ढेर हैं बन रहे -,
कहीं क -हीं पूरा परिवार तबाह हो रहे,
कश्मीरअबलाएं रो रही अपने सुहाग के लिए -,
कश्मीर की घाटियां रो रही अमन के लिए,...

कश्मीर हमारा ही रहेगा

कश्मीर तो हमारा है हमारा ही रहेगा।
अलग घर दिया है तुमको, फिर क्यों शोर मचाते हो?
ऊंगली पकड हाथ पकड़ा, कश्मीर पर लार गिराते हो।
श्वेत बर्फ सत्य का प्रतीक सत्य भारत का रहेगा।
कश्मीर तो हमारा है हमारा ही रहेगा।
भारत की मिट्टी से ही, पाक तेरा बीज उपजा है।
कश्मीर की हवाओं से, तुम्हारा बीज पनपा है।
केसरिया वीरों का रंग केसर भारत का ही रहेगा।
कश्मीर तो हमारा है हमारा ही रहेगा।।
पहले अपने घर को संभालो, कश्मीर क्या खाक संभालोगे?
चाहे कितने आतंकवादी पालो, पर हाथ नहीं कुछ पाओगे।
माथे का मस्तक कश्मीर सिंदूर वहीं दमकेगा।
कश्मीर हमारा है हमारा ही रहेगा।
तुम्हारी लालची प्रकृति को, अब हम कुछ भी नहीं देंगे।
कश्मीरअंश लिया है जो -, उसे भी अब हम छीन लेगे।
हरी भरी घाटियों से पूर्ण जन्नत नहीं मिलेगा।-
कश्मीर तो हमारा है हमारा ही रहेगा।
केदारनाथ, अमरनाथ सब, कश्मीर की गोद में बसते।
बद्रीनाथ और गंगोत्री सब, तीर्थों की छटा बिखेरते।
पावन धरा तीर्थ कश्मीर तीर्थ स्थल वहीं रहेगा।
कश्मीर तो हमारा है हमारा ही रहेगा।।

कश्मीर तुम्हें पुकार रहा

उठो जवानो बढ़े चलो कश्मीर तुम्हें पुकार रहा।
रक्त रंजित धरा को देखो कश्मीर तुम्हें पुकार रहा।
शान्त सोयी पहाडियों मे खेली शत्रु ने रक्त होली -
घुसपैठ कर चोरी से दागी असंख्य बन्दूक गोली -
आज देश का जन चप्पा हुंकार रहा।- जन चप्पा -
उठो जवानो बढ़े चलो कश्मीर तुम्हें पुकार रहा।।
कश्मीर की घाटियों में दुश्मन ने खूब रार मचाई,
धोखे से वार पीठ पर, उसने खुद मुँह की खाई।
पाक की बेशर्मी का डंका विश्व में चिंघाड रहा।
उठो जवानो बढ़े चलो कश्मीर तुम्हें पुकार रहा।।
दुश्मन को मार भगाने वीर जवान टूट पड़े,
मां की रक्षा करने हेतु मातृभूमि पर मर मिटे।
मां के आंसू देख आज हर ह्रदय चीत्कार रहा।
उठो जवानो बढ़े चलो कश्मीर तुम्हें पुकार रहा।।
पाक तेरी बदनीयती पूरे जग मे जाहिर है,
वीरों के रक्तपान में शत्रु कितना माहिर है।
पूरा विश्व पाक को घृणित दृष्टि से निहार रहा।
उठो जवानो बढ़े चलो कश्मीर तुम्हें पुकार रहा।।
धोखे से गद्दारों ने भारत मां की मर्यादा तोडी,
शान्त बर्फ सी देह में हिंसा की चिंगारी छोडी।
गद्दारों को सबक सिखाने जन जन पुकार रहा। -
उठो जवानो बढ़े चलो कश्मीर तुम्हें पुकार रहा।।

तिरंगा झंडा लहराता जा नीलगगन

तिरंगा झंडा लहराता जा नीलगगन।
गर्वित हो करते रहे तुझको नमन।।
झंडे के नीचे दबी असंख्य कुर्बानी,
नरनारी-,बच्चे,बूढों की कहानी,
कुछ का न कोई नाम न निशानी,
दब गई आजादी की धूल में कहानी।
पवन संग लहराता जा नीलगगन।
हर्षित हो करते रहे तुझको नमन।।
केसरिया दर्शाये वीरों की बलिदानी,
श्वेत कहे भारतीयों की सत्य जुबानी,
हरा सुनाये हरियाली और खुशहाली,
नीलचक्र न्याय धर्म की अपूर्व निशानी,
रात दिन लहराता जा नीलगगन।
पुलकित हो करते रहे तुझको नमन।।
इसकी खातिर सुभाष चंद्र ने,
लगा दी बाजी अपनी जान की,
तुम मुझे खून दो मैं दूंगा आजादी,
नारा ले आया जन लहर की ऑधी।
झूमझूम लहराता जा नीलगगन।-
मुखरित हो करते रहे तुझको नमन।।
तिरंगा झंडा लहराता जा नीलगगन।
गर्वित हो करते रहे तुझको नमन।।

शेर की मांद में कौन गीदड़ घुस आया?

शेरों की मांद में कौन गीदड घुस आया?
कश्मीर की घाटी में किसने आतंक मचाया?
चोरों की तरह घर में घुस, वार पीठ पर करते,
शान्ति के पुजारी बन सदा भ्रष्ट आचरण करते।
बर्फीली शान्त पहाडियों में युद्ध का बिगुल बजाया।
कश्मीर की घाटी पर किसने आतंक मचाया?
अधर्म सदा परास्त हुआ सत्य सदा मुस्कराई,
आज अपने दुष्कर्मों से पाक ने मुंह की खाई।
छल कपट भरे दामन में हिंसा का दाग लगाया,
कश्मीर की चोटी पर किसने आतंक मचाया?
जो होते वीर महा पुरुष क्षमा वही कर पाते,
दुष्ट अपनी गद्दारियो से बाज कभी न आते।
आज उन्होंने नरसंहार का ताण्डव मचाया।
कश्मीर की चोटी पर किसने आतंक मचाया?
मूर्ख गलती कर औरों की शिकायत करते,
दूसरों के आंगन में भीग याचना करते
आज विश्व जनमत ने पाक को दोषी पाया।
कश्मीर की चोटी पर किसने आतंक मचाया?
अमन चैन जिन्हे नापसंद वे उत्पात मचाते,
हवस पूर्ण करने को मानव की भेंट चढाते,
निर्दोष और मासूमों को आज कफन पहनाया।
कश्मीर की चोटी पर किसने आतंक मचाया?

आज वतन खतरे में है

आज वतन खतरे में है। सारा वतन खतरे में है।

बहना भाई पूछ रही है,
लाशों में कुछ ढूंढ रही है,
राखी का मूल्य मांग रही है,
कर्तव्य पृष्ठ खोल रही है,
भ्रातृ प्रेम को तोल रही है।
आज बहन खतरे मे है। सारा वतन खतरे में है।
भाईभाई भूल भूल रहे हैं-,
रिश्तेनाते टूट रहे हैं-,
मां की कर्ज को भूल रहे हैं,
अपनापन क्यों तोड़ रहे हैं?
नीरस धागे जोड रहे हैं।
आज अमन खतरे में है। सारा वतन खतरे में है।
दुल्हन मंडप में बैठी है,
द्वार बरातआन खड़ी है,
खुशियों की सौगात लड़ी है,
दहेज दानव बोल उठे,
मोल भाव कर तोलउठे।
आज लगन खतरे में हे। सारा वतन खतरे में है।

खामोश

निगाहें खामोश हैं,,
आहें खामोश हैं,
खामोश हैं वे रास्ते, जहाँ से शहीद गुजरे हैं।

घर द्वार खामोश है-,
गाँवनगर खामोश है-,
खामोश है वो पत्नी, जिसकी माँग में अँगारे दहक रहे हैं।

खामोश हैं पिता को पुकारते होंठ.,
खामोश हैं गोदी को पसारती बाहें,
खामोश है वो बचपन, जहाँ हर प्रश्न खामोश है।

वृद्ध पिता खामोश है,
वृद्ध माता खामोश है,
खामोश हैं बूढ़ी हड्डियाँ, जिन्होंने जवान बेटे का गम सहा है।

खामोश है दिन की रोशनी,
खामोश है रात का अँधेरा,
खामोश है वो दीपक, जिसका प्रकाश छिन गया है।

किसने मद की मदिरा घोली

कौन चढा लेकर आंधी किसने मद की मदिरा घोली?,
सोये शेरों की मांदों में किसने दागी बन्दूक की गोली ?

हम सन्तति उन्ही आर्यों के, है शक्ति शौर्य और रक्त वही।
हमने सीखा धर्म पर मरना, है दृढ प्रतिज्ञ अभिमान वही।
उनके आदर्शों पर चलकर, जलाएँ अनैतिकता की होली।
क्या भूल गए उन शेरों को जिसने रखा स्वाभिमान का मान
भूख वरण कर ली जिसने, राणाप्रताप ने रखा वंश का मान
निज मातृभूमि की रक्षा में खेलेंगे हम रक्त की होली।
भूल गये रानी लक्ष्मी बाई को, मान से जीना सिखलाया।
दबी हुई इस चिंगारी को, स्वाधीन मंत्र से सुलझाया।
नींव का पत्थर बन स्वयं, आजादी की लहर घोली।
स्मरण करो उस महात्मा को, जिसने तपकर जीना सिखाया।
शान्ति, प्रेम का शंख बजा, अंग्रेजों को यहाँ से मार भगाया
साकार करें हम गांधीजी के, आदर्शों की इक इक बोली।

कौन चढा लेकर आंधी किसने मद की मदिरा घोली?
सोये शेरों की मांदों में किसने दागी बन्दूक की गोली?

कैसी आई रे दिवाली?

युद्ध की चल रही आँधी, कैसी आई रे दिवाली ?
बहिनों के नेह का सूना हुआ डगर,
कपोलों पर बहता सूख गया समन्दर,
बिन भैया कैसे भाई दूज मनाएँगी, कैसी आई रे दिवाली ?
ललनाओं के माथे का सिन्दूर मिट गया,
सारा संसार उनका वीरान हो गया,
कभी न आयेगी प्रीतम की पाती। कैसी आई रे दिवाली.?
घर का एक चिराग ही गुल हो गया,
मातृभूमि की वेदी पर शहीद हो गया,
घर के आँगन में कैसे गूँजेगी किलकारी ? कैसे आई रे दिवाली.?
विदा दे रहे खेत,गाँव और नगर,
जा रहे सिपाही सीमा पर हर पहर,
बारूदों की चल रही भयंकर आँधी। कैसी आई रे दिवाली ?
अबोध बच्चे पूछेंगे कब आयेंगे तात,
कब लायेंगे खिलौने,कब खायेगे साथ?
बिन दीये कैसे जलेगी बाती?
युद्ध की चल रही आँधी। कैसी आई रे दिवाली?

ललनाओं हो जाओ तैयार

ललनाओं हो जाओ तैयार। अब आई युद्ध की बारी है।।

क्षत्राणियों के खून में उमड़ रहा है जोश,
हवाएं भी झूमझूम गा उठी मदहोश ,
दुश्मन के ठिकानों पर हम करें वार पर वार। ललनाओं हो जाओ तैयार।।

हाथों में चूड़ियों के साथ अपने खड्ग थाम लो,
रानी लक्ष्मी बाई सम, ढाल पीठ पर बांध लो,
आंधी सी हम टूट पड़े करना है दुश्मन का नाश। ललनाओं हो जाओ तैयार।।

कश्मीर से शत्रु को खदेड़ के ही दम लेंगे,
रानी सारंधा बन, दुश्मनों से बदला देंगे,
आन की खातिर भोंक ली जिसने कटार। ललनाओं हो जाओ तैयार।।

वीरों का यह देश वीरांगना ही इसकी शोभा,
छोटे बच्चे यहां खेल में लेते अग्नि से लोहा,
आल्हागाथा-ऊदल-,जनजन भर दे हुंकार। ललनाओं हो जाओ तैयार।।-

आज दुर्गा बन दिखलाएं हम रणजौहर-,
माता अहिल्या जैसा दिखाएं युद्ध कौशल-,
माता जीजाबाई सम उठा लो हाथों में तलवार। ललनाओ हो जाओ तैयार।।

कैसा आया रे बसंत?

जीवन का होगया मानो अन्त। सखि कैसा आया रे बसंत?
पौधे खामोश से लग रहे,
निर्जीव मानो सो रहे हैं।
पलाश ऐसे सुलग रहे,
मानो अंगारे दहक रहे।
किसकिस का होवेगा अंत-, सखि कैसा आया रे बसंत?
युद्ध की चल रही आंधियाँ,
मौत की सुना रही कहानियां।
वीरों की बता रही जवानियां,
आन पर मर मिटी क्षत्राणियाँ।
गूंज बलिदान की दिकदिगंत -, सखि कैसा आया रे बसंत ?
वीरों ने पहना बसंती चोला,
सिर पर बांधा कफन का सेहरा।
तोड़ा गांव परिवार से नाता -,
रणभूमि से अब उनका नाता।
चहुँ ओर तूफानों का ना कोई अंत, सखि कैसा आया रे बसंत ?
रण में युद्ध बाजे बज रहे -,
शस्त्र ले सैनिक आगे बढ़ रहे।
ऊपर बर्फीली आंधियां और,
सीने पर गोलियाँ सह रहें।
कर रहे दुश्मन से भिडन्त, सखि कैसा आया रे वसन्त?

आखिर कब?

ये दुराचार कब खत्म होगा ?
कब तक बेटियाँ असुरक्षित रहेंगी
मासूम बेटियाँ कब तक
इन दरिन्दों का शिकार होती रहेंगी?
लगता है हर जगह हैवान घूम रहे है।
जो बालाओं का अपहरण कर रहे हैं
दुष्कर्म कर रहे हैं
नोचनोचकर खा रहे हैं।-
क्या बेटियाँ घर से बाहर न जाए
स्कूल पढ़ने न जाए ?
आखिर कब तक?
कब तक वे पीड़ा सहेंगी ?
कब तक अत्याचार का शिकार होंगी
उनके हिस्से की पीड़ा हम मिटा तो नहीं सकते
जो भोगा है उन्होंने
उसे मस्तिष्क से हटा तो नहीं सकते
पर, क्आखिर कब तक ?
वे शर्म से मुँह छपाती ऱहेंगी
कब तक दर्द से कराहती रहेंगी ?
इन दरिन्दों को फांसी क्यों नहीं देती सरकार?
उनके हाथ पैर क्यों नहीं काटती ?
सरकार कहती है पर करती क्यों नहीं ?
सरकार की कथनी करनी कब एक होगी-?
आखिर कब दरिन्दों को फांसी होगी। आखिर कब? आखिरी कब?

कश्मीर की अन्तःव्यथा

मेरी बर्फ सी देह पर
किसने अंगारे बरसा दिए ?
श्वेत, स्वच्छ चादर पर
किसने खींची रक्तिम रेखा ?
शान्त,अलमस्त थीं पहाडियाँ
सुलझाई बारूद की चिंगारियाँ,
महकती थीं केसर क्यारियाँ
हरी भरी थीं मेरी घाटियाँ
कर दिया शरीर क्षतविक्षत -,
मन लहूलुहान
लहकती थी जो घाटियाँ
अब सिसक रही है।
डल झील वीरान सी हो रही
एकान्त में अश्रु बहा रही।
मेरी पवित्र थी काया,
प्राकृतिक सौन्दर्य माया
दुष्टों ने अपनी पशुता से
मेरी अस्मिता को भंग कर दिया।
पावन धरा थी मेरी
उसे रक्त रंजित कर दिया।।

कश्मीर ममता की खुशबू :

आज भी मां के सूने आंचल में
ममता की खुशबू है।
आज भी वहाँ की हवाओं में
अपने पन की खुशबू है।
उजडी क्यारियो मे
केसर की महक है।
खामोश वादियों में
हंसी की खनक है।
आज भी चिनार के
सूखे पत्तों में चरमराहट है।
रात की चांदनी में
कपकपाती सरसराहट है।
मन में जीने की उमंग है,
तैरती ह्रदय में एक तरंग है।
लेकिन विवशता ने पैर बांध दिये हैं।
दुश्मन ने उम्मीदों पर गोले दागे दिये हैं।

खिलाएँ पुष्ष हम शुद्ध आचरण के

खिलाएँ पुष्प हम,शुद्ध आचरण के।
महक उठे कणकण-, आज वातावरण के।
हिंसा और भ्रष्टाचार का, बाजार गर्म हो रहा ।
छलकपट-, फरेब का तांडव नृत्य हो रहा।
मिटाएं घृणा, द्वेष, झूठ आवरण के।
महक उठे कणकण इस वातावरण के।-
सत्य, प्रेम,दयाभाव, सब कहाँ लुप्त होगए।
वेद,पुराण,उपनिषद, न जाने कहां खो गए।
धर्म ही साथ रहे उपरांत मरण के।
महक उठे कणकण इस वातावरण के।-
कर्तव्य सत्य,त्याग भाव, नव पुष्ष हम खिलाएँ।
निस्वार्थ, निष्काम भाव, निज कार्य में हम सजाएं।
गीत गाएं आज पुनः नव जागरण के।
महक उठे कणकण इस वातावरण के।-
सभ्यता के आंगन में, मानवता सिसक रही।
नरपिशाच हो रहे-, दनुजता किलक रही।
चमक उठे फिर कटार नृत्य हेतु रण के।
महक उठे कणकण इस वातावरण के।-

अटलजी हिम जैसे अटल

अटलजी सचमुच थे तुम हिम जैसे अटल।
भारत माता के सच्चे सपूत थे अद्‌भुत विरल।।
शरीर दिव्य हो गया आवाज मौन हो गई।
अटलजी की आत्मा आज अमर हो गई।
बात कहते सटीक थे शान्त मन निर्मल।
अटलजी सचमुच थे तुम हिम जैसे अटल।।
मौन है आज आस्माँ मौन है सारी जमीं
मौन है शीतल पवन मौन है माँ भारती।
देशप्रेम अलख जगायी थे ह्रदय निश्छल। -
अटलजी सचमुच थे तुम हिम जैसे अटल।।
शब्दों का भंडार थे, भावनाओ का ज्वार थे।
कुशल राजनीतिज्ञ, भाषण धुआंधार थे।
आरोप प्रत्यारोप से विरोधी हो जाते तरल।
अटलजी सचमुच थे तुम हिम जैसे अटल।।
समुद्र से गम्भीर थे, सच्चे कर्मवीर थे,
शान्ति के मसीहा, स्पष्टवादी, धीर थे।
सत्यनिष्ठ, स्वाभिमानी थे मन के सरल।
अटलजी सचमुच थे तुम हिम जैसे अटल।।
जीवन युद्ध विजेता, कष्टों में भी हंसते।
बाधाओं को परे हटा राह स्वयं चुनते।
रहे संघर्षरत सदा कभी न हुए अविचल।
अटलजी सचमुच थे तुम हिम जैसे अटल।।

कवि, पत्रकार, बहुमुखी प्रतिभा के धनी।

थे अजातशत्रु, संवेदनशील और महाग्यानी।

औरों को पिलाया अमृत, खुद पिया गरल।

अटलजी सचमुच थे तुम हिम जैसे अटल।।

देते श्रद्धांजलि अश्रुपूरित हमारे मूकनयन।

देश रहेगा ऋणी करेगा सदा आपका वन्दन।

शतशत करते नमन हे भारत रत्न अटल।-

अटलजी सचमुच थे तुम हिम जैसे अटल।।

आजादी का सफर कितना लंबा है ?

कितनी माताओं की,सूनी हो गई गोद।
तरसे होंगे रोटी के लिए असंख्य अबोध।
इस बँटवारे का,नगर कितना लम्बा है?
आजादी का सफर कितना लम्बा है?
अनगिनत स्त्रियों का,संसार सूना हो गया।
मुस्कुराती बगिया का,चमन वीरान हो गया।
कपोलो पर सूखा,सागर कितना गहरा है ?
आजादी का सफर कितना लम्बा है?
रक्षाबंधन पर कितनी राखियां, सिसकी,तड़पी होंगी।
दिवाली पर अगणित,मंगल टीके बहे होंगे।
बहनों के नेह का, डगर कितना लंबा है?.
आजादी का सफर कितना लम्बा है?
बही होंगी कितनी, खून की नदियां।
मिटी होंगी हिंदू और मुस्लिम की कहानियां।
अगणित लाशों का किस्सा कितना लंबा है ?
आजादी का सफर कितना लम्बा है?
अनगिनत अनाथ दरबदर भटके होंगे।-
असंख्य अबलाओं के आवरण उघड़े होंगे।

आहकराह का-, दर्द कितना लंबा है ?
आजादी का सफर कितना लम्बा है
कितनों ने परिजनों को, हलाल होते देखा।
अपने जिगर के टुकड़ों को, दम तोड़ते देखा।
तूफानी हवाओं का, नगर कितना लंबा है?
आजादी का सफर कितना लम्बा है?
कितने बेमौसम, सैलाब बहे होंगे।
कहे अनकहे-, दर्द सिसके होंगे।
खामोश निगाहों का सूनापन कितना लम्बा है?
आजादी का सफर कितना लम्बा है?

भारत राष्ट्र महान

गूंजे दिशि दिशि में यह गान,
बनाएं भारत को राष्ट्र महान
कटुता ईर्ष्या को दूर भगाकर
मानवता का पाठ पढाए
सद्भावना के फूल खिलाकर
चढे उन्नति के सोपान,
बनाए भारत को राष्ट्र महान।
ऊंचनीच का भेद मिटाकर-
पीड़ित जन को मार्ग दिखाए
शान्ति अहिंसा का व्रत लेकर
गाए मानवप्रीत के गान-,
बनाए भारत को राष्ट्र महान।
भ्रष्टाचार को दूर भगाकर
ईमानदारी के फूल खिलाएं
भाई चारा जन जन फैलाकर
करें हम संस्कृतिउत्थान-,
बनाए भारत को राष्ट्र महान।
नारी यहाँ की पुरुषों से आगे
धर्मकर्म का काज संवारे-
लक्ष्मी बाई ने हार न मानी

थी भारत का अभिमान,
बनाएँ भारत को राष्ट्र महान।
राम कृष्ण की जन्मभूमि है
गौतम की ये तपोभूमि है
गांधी की ये कर्म भूमि है
थे वे अमर पूत महान,
बनाएँ भारत को राष्ट्र महान।।
त्योहारों की गरिमा फैल रही
विज्ञान की जोत उजास हुई
प्रेम,त्याग और सहिष्णुता में
भारतभूमि हुई प्रधान,
बनाए भारत को राष्ट्र महान।।

सलाम

उन सपूतों को सलाम,
जिन्होंने झेली अपने सीने पर गोलियां,
मिट गई जिनकी कहानियाँ।
रह गई केवल अमर स्मृतियाँ।
उन माताओं को सलाम,
जिनकी कोख धन्य हो गई,
ममता गर्वित हुई कर पुत्र बलिदान।
रह गए ऑसू और मुस्कान।
उन बहिनों को सलाम,
जिनकी राखी सिसकती रहेगी,
अपनों की याद ताजा करती रहेगी ।
सूख गए ऑसू सजल हैं नयन।।
उन पिताओं को सलाम,
जिनके कांधों ने उठाई बेटे की अर्थियां,
नहीं बची कोई उसकी निशानियां।
किया देश हित वंश कुर्बान।।
उन पत्नियों को सलाम,
जिनकी मांग में अंगारे सुलग रहे,
आँखों में अश्रु झिलमिला रहे।
शून्य में निहारते मौन प्रश्न।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - आशा जाकड़

जन्म - 10 जून 1951, शिकोहाबाद

शिक्षा - एम.ए. हिन्दी साहित्य एवं समाज शास्त्र, बी.एड.।

कार्यक्षेत्र - शिक्षण अनुभव 38 वर्ष (से.नि.शिक्षिका)

पता - 747, सांई कृपा कोलोनी, रेडीसन होटल के पास, इंदौर (म.प्र.) 452010

ई मेल - asha.jakar@gmail.com

मो. - 9754969496

प्रकाशन - राष्ट्र को नमन (काव्य संग्रह)
अनुत्तरित प्रश्न (कहानी संग्रह)
नये पंखों की उड़ान (काव्य संग्रह)
सिंहस्थ महोत्सव 2016 (निबंध)

सम्मान - सरल अलंकरण, साहित्य मणि, श्री सिंहस्थ सम्मान, मैं हूँ बेटी सम्मान (लखनऊ) शब्द शक्ति सम्मान (म.प्र.), राष्ट्रीय भाषा गौरव सम्मान (इलाहाबाद), कृष्ण जैन स्मृति सम्मान (शिलांग), महिला गौरव सम्मान (सुरभि सा. संस्कृति अकादमी खण्डवा) आदि।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-03-1

मूल्य- 55/-